अंग के सरंग मॅं, उमंग रंग-रंग के।

हुलास

अंगिका गीत-काव्य दौरी

सुधीर कुमार सिंह 'प्रोग्रामर'

Published by

SHWETWARNA PRAKASHAN
New Delhi

First Edition in Hindi in paperback as *HULAS by Sudhir Kumar Singh 'Programer'* in the year 2021 by Shwetwarna Prakashan.

Shwetwarna Prakashan
Flat No. 232, S/F, Pkt-B1, Lok Nayak Puram,
New Delhi-110041
Mobile: +91 8447540078
Telephone (Noida office): 0120-3557331
Email : shwetwarna@gmail.com
Website : www.shwetwarna.com

Copyright © Sudhir Kumar Singh 'Programer'

ISBN: 978-93-91081-87-4

The views and opinions expressed in this work are the author's own and the facts are reported by him,And the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved.

Cover Design: Garima Saxena

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without express written permission of the publisher.

समर्पण
हमरों आदर्श.....

राष्ट्रीय कवि
अंग-रत्न
श्री भगवान प्रलय
कें .....।

– सुधीर

इस संग्रह को पढ़ कर जो मन में आये उसे यहाँ लिखें

और इस पन्ने की तस्वीर +91 8447540078 पर व्हाट्सअप से भेजकर
श्वेतवर्णा को भी अपनी प्रतिक्रिया बताएँ!

आपनों बात

आपनों अंगिका भाषा के काव्य–दौरी में प्रकाशित 'अंगरथ', 'हमरो गीत' आरो 'अंगजल', 'खरसूप' के बाद हाजिर छै गीत कलश 'हुलास'।

आपनें सनी जानै छीयै कि हम्में 1985 से आयतक कम्पूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के छात्र छिकौं। संयोग सें 1998 में कविवर 'हीरा प्रसाद हरेन्द्र' जी के अंगिका कविता सुनी के मन में हुलास जागी गेलै। हिनी अंगिका वर्तनी के गुर सिखाय के ऐहिनों लकड़ी सुंघैलखिन आरो गुरेश मोहन घोस 'सरल' जी के अदालत में पेश करी के हमरां अंगिका के गुलाम बनाय देलखिन। फेरू सरल जी के माध्यम सॅ लोकभाषा अंगिका के राष्ट्रीय कवि आदरणीय भगवान प्रलय जी के दर्शन होलै। हुनको गीत सुनी कें हम्में अंगिका गीत के दिवाना बनी गेलियै। कलांतर में भगवान प्रलय आरो हुनको गीत हमरो आदर्श बनी गेलै।

आय बड़का भैया श्री भगवान प्रलय जी के चरण कमल में प्रेमोपहार स्वरूप अंगिका गीत–कलश 'हुलास' समर्पित करी के गौरव अनुभव होय छै।

फेरू अंगमहाजनपद के वरीय–कनीय साहित्यकारों के सानिघ्य में रही के, अंग धरा के जोती–कोड़ी आरो काटी–बाँन्ही के हिन्दी के पाँच आरो अंगिका के आठ कृति प्रकाशित करै के सौभाग्य मिललै। जैमें 'अंगरथ' काव्य घुच्चा, के लोकार्पण ततकालीन माननीय रेल मंत्री श्री नीतीश कुमार (भारत सरकार) द्वारा करलों गेलै। संयोग से 'अंगरथ' तिलका माँझी भागलपुर विश्व विद्यालय के स्नातक पाठ्क्रम में शामिल होलै, आरो मन में अंगिका के प्रति हुलास बढ़ी गेलै। इ बीच कई प्रदेश आरो राष्ट्रीय स्तर के सरकारी, गैर–सरकारी साहित्यिक मंचो पर काव्य पाठ आरो संचालन करै के

मौका मिलतै, चाहे साहित्य अकादमी, दिल्ली रहे या मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली। एकरो अलावे पश्चिम बंगाल, झारखंड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, सहित आकाशवाणी आरो दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित होला के साथ–साथ सराहलो आरो पुरस्कृत करलो रचना के 'हुलास' संकलन में शामिल करै के प्रयास करने छियै।

हमरों गीत', नाटक :– 'छप्पर फाँड़ी कॅ', 'भुषणा सिनूर' 'अंगजल' (गजल संग्रह– 2016)। अंगिका कहानी संग्रह 'खरसूप' 2017 में छपलै। आरो 'हुलास' (गीत–दौरी) आपने के हाथों में छै।

'हुलास' में सतरंगा छन्द के संतृप्त घोल मिलतै। जै में सोहर, लोरी, गौरव, जागरूकता, विरह, कोरोना, उमंग, होली, प्रकृति, दोहा, मुकरी, कुण्डलिया, गीत, गजल, माहिया, विरह, कश्मीरी छन्द, आरनी से थरिया सजाबै के प्रयास करने छीयै। चाखियै आरो सबाद बताबै के कृपा करियै।

बस!

जय हिन्द! जय हिन्दी !! जय अंग! जय अंगिका!!

–सुधीर प्रोग्रामर

अनुक्रमणिका

	आपनों बात	5
1.	सोहर	9
2.	लोरी	10
3.	गौरव–गीत	11
4.	फुनगी पर बिहार	12
5.	विरह गीत	13
6.	विषमता	14
7.	ओढ़ना तानी के	15
8.	डेराय गेलौं	16
9.	पहुनमां	17
10.	दुयेगो संतान	18
11.	होली	19
12.	नया साल	20
13.	हिन्दुस्तान	21
14.	किल्ला खूटी–खूटी	22
15.	तीन रंगिया	23
16.	मन झूमी कें	24
17.	फेरू ऐलै	25
18.	गोरख धंधा	26
19.	टुकुर–टुकुर	27
20.	छांहीं में	28
21.	सुख के भुरूकबा	29
22.	गंगा के पानी	30
23.	कोरोना	31
24.	तिरंगा	32
25.	नयका सूरज	33
26.	काँवर	34

27. उत्सव 35
28. कौआ नहौन 36
29. होली 37
30. गुलबिया : कवित्त 38
31. कश्मीरी 39
32. माहिया (12,10,12) 40
33. बड़ा दिन 41
34. दोहा 42
35. मुकरी 45
36. कुण्डलियाँ 48
37. चेक काटी के 52
38. माय-बेटी 54
39. इतिहास 55
40. गाँव आबें 56
41. होतै हल 57
42. कलें-कलें 58
43. हरैले 59
44. अकल्ली जान 60
45. ठनका गिरावें 61
46. उजाड़ सन लगै 62
47. हायकु 63
48. कौवा गहलै 64
49. दीया नाँकी 65
50. लगडा भी दौड़ै झटकै छै 66
51. सरंग 67
52. राधेश्यामली छंद (16,16) 68
53. टालों नै 69
54. पुरषोत्तम राम 70
55. डॉ. नरेष पाण्डेय चकोर 71
56. सरहपा : (अंगिका के गाछ) 72

सोहर

सखि : कौनी कोखी लेल्हे तोंय जनम अंगिका
कौनी कुल परिवार लागै हे,
अंगिका हे, कौनी देहरी होल्हे तोंय सियान
सुहानों विहुला–पुराण भेलै हे।

अंगिका : अंग कोखी हमरौं जनम भेलै
गंगा–कोसी, मौसी लागै हे
सखिया हे, हौलौं अंग देहरी सियान
सुहानों विहुला–पुराण भेलै हे।..2

सखि : कौने तोरा कांहा पर घुमाबै छेल्हौन
बुलै लें सिखाबै छेल्हौन हे
अंगिका हे, कौने तोरा देलखौन ई नाम
जे सगरे सुहावन लागै हे।..2

अंगिका : औसी, मौसी कान्हौं पर घुमाबै
सरहपाद, बुलै ले सिखाबै छेलै हे
सखिया हे, राहुल सांकृत्यायन देलकै ई नाम
जे सगरे सुहावन लागै हे।..2

सखि : कहां के तोय रानी महारानी छीको
कहाँ तक राजधानी तोरो हे
अंगिका हे कहाँ–कहाँ कोहबर में नाम
जे सगरे सुहावन लागै हे।..2

अंगिका : हम्में नै तै रानी, नै ते महारानी छीकौ
करोड़ों के भाषा–वाणी छीकौ हे
सखिया हे, अंग–महा–जनपद के विदेही
जे सगरे सुहावन लागै हे।..2

लोरी

छोटो–छोटो अँखिया में मोंटो–मोंटो लोर रे
चानों केरो बेटिया से बेटी हमरो गोर रे।
लाले–लाले सुग्गा सन सुगनी के ठोर रे
छोटो–छोटो अँखिया में मोंटो–मोंटो लोर रे।

दादी के दुलारी बेटी दादा के सपनमा
गम–गम गमकै छै बाबू के बगनमां
अंगेठी करी के निनिया आबै पोरे–पोर रे
छोटो–छोटो अँखिया में मोंटो–मोंटो लोर रे।

सपना मे सोची–सोची–सोची सपना सजाबै छै
सुतला में नून–बाबू हॉसी के लजाबै छै
काजरो से लेधरैलो आँखी केरो कोर रे
छोटो–छोटो अँखिया में मोंटो–मोंटो लोर रे।

नुनीयां के मचीया से झूलै कजरौटिया
मचीया से सटलौ छै दादी केरो खटिया
नुनू करै गुजुर–गुजुर दादीये निंभोर रे
छोटो–छोटो अँखिया में मोंटो–मोंटो लोर रे।

सरकी जे गेलै ऐलै नानी के खबरिया
चँदा मामा हुलकै छै खोली के केबरिया
सुती गेलै, सुतै दहीं कोय नय बोलें जोर रे
छोटो–छोटो अँखिया में मोंटो–मोंटो लोर रे।

गौरव-गीत

देखलौं बहार ऐंगना घूमीं–घूमीं–2
गाबै, हमरॉ बिहार हो झूमीं–झूमीं।

बिक्रमशिला के गाथा, अपरम–पार जी
समुंदर के महीं देलकै पर्वत मंदार जी
बुद्ध के दुआर–देहरी चूमीं–चूमीं–2
गाबॉ, महिमां बिहार के झूमीं–झूमीं।

विद्यापति जी हमरॉ मैथिली महान जी
भोजपुरी गीत–गाथा भिखारी के शान जी
नेपाली के गीत गाबॉ आमी–तूमी–2
अंग–अंगिका सुनाबॉ हो झूमीं–झूमीं।

साईकिल पैं चिड़ियाँ नाँकी चहकै बहिनियाँ
हमरॉ विकास देखी चौकै छै दुनिया
नालंदा मैं लोग, आबै जूमीं–जूमीं–2
गाबै हमरॉ बिहार हो झूमीं–झूमीं।

आगू तिरंगा साथें बिहारी जबान जी
देश के सपूत सौसें हिन्द केरो शान जी
दुश्मन कें ठोकै, कुण्डा हूमीं–हूमीं–2
फहरै सरंग में तिरंगा हो झूमीं–झूमीं।

फुनगी पर बिहार

मेहनत सँ टूटतै, दरद के पहाड़ हो
रसें–रसें फुनगी पर, चढ़तै बिहार हो
जोर दहो, जोर से लगाय। बिहारी

कमियाँ–कमासूत छै जेरा के जेरा
ऐंगना में हुलकै छै, टुह–टुह सबेरा
खेतों के सोना, ओसाबों खम्हार हो
टाल दहो टाल के लगाय। बिहारी

बुद्ध केरो धरती, महावीर के डेरा
बेटी ते चाँन छीकै, बेटा सितारा
दोनों बुढ़ापा के बनतै कहार हो
लूर दहो लूर से सिखाय। हो बाबू

इ पहिनैं, उ पहिनैं, छोड़ो अरार हो
मिल्लत के गाछी तर, मिलथौं छहार हो
कहियो नै लौटै, पुरनका अन्हार हो
सूरज के गाछ दँ लगाय। बिहारी

विरह गीत

गरजी–गरजी बरसै, करका बदरबा जे,
कोनी ठीहां मचिया बिछाबों गे दुलरिया।
झरिया में भींगी गेलौ, गेनरा–भोथरवा जे,
भींगी गेलौ अचरा के कोर गे दुलरिया।

भींगी–भींगी सुख्खी गेलौ छतिया के दूधबा जे,
सुख्खी गेलौ अखिया के लोर गे दुलरिया।
चाटी–चाटी लाल भेलै हाँथों के अंगुठबा से
लाले लाले सुगनी के ठोर गे दुलरिया

अरजै ले बाबू गेलौ, टकबा के ढेरिया जे
कहाँ में जे सुतलो, निंभोर गे दुलरिया।
जागी–जागी सुती गेलौ मनों के सपनमां जे,
सुती गेलौ जिनगी के भोर गे दुलरिया।

नियती के देहरी पे दोहरा करम देखी
विधना के नियमां कठोर गे दुलरिया।

विषमता

साँझ लेल्ी तेल नै छै, डिबिया विरान हो
कोनी मुँहें कहियै हमरोंं, भारत महान हो।

शिक्षा के ढोल पीटै, सुनी बरै धून जी
हमरोंं बूतरू आँगनबाड़ी, हुनको देहरादून जी
हमरा घर नै नोन–रोटी, हुनका पकवान हो।

भारत माय के बटुआ मेंं, करी देलकै भूर जी
आजादी के कुर्सी–धारी, सीयै के नै लूर जी
हमरा पेट मेंं खोर नै छै, हुनका मगही–पान हो।

कन्हैं नै रस्ता सूझै, सगरे अन्हार जी
ऐंना आजादी केरोंं लागै आर–पार जी
कत्ते महँगोंं खाद–डीजल, कत्ते सस्तोंं जान हो।
कोनी मुँहें कहियै हमरोंं भारत महान हो।

ओढ़ना तानी के

झोपड़ी सेंं दालान बनैबै खेत मॅं काटी–बान्ही केंं
थकलोंं–हरलोंं मोन जुडैबै, सुतबै गमछा तानी केंं।

सबसे बढ़ियां आपनोंं गाँव छै, आरो गाँव के धरती हो,
मिली–जुली सब जोतबै–बूनबै, कभी न छोड़बै परती हो
हरा खेत हरियाली लानतै, देखिहो धरती रानी केंं
भारत के खुशहाल बनैबै, हम्मूं छाती तानी केंं।

सबसे मेल बनाय के राखबै, जीतिया में तरकारी चाखबै
सजबै–धजबै, नाचबै–गैबै, रोटी लेली कभी नै झखबै
दुर्गा काली पूजबै खैबै, दही मेंं चूड़ा सानी केंं
बीच में झगड़ा जे लगबैतै, धोपी देबै हानी केंं।

देखा–देखी सत्तू बाँधी गेलों दिल्ली से पंजाब
चाँनी के सब बाल हेरैलै, अैलों घोर ते घुटलोंं घाँव
आधा उमर बितैलौं भैया, भीतरे–भीतर कानी केंं
यहै कमैबोंं भर दोम खैबोंं, सुतबोंं कम्मल तानी केंं।

डेराय गेलौं

डेराय गेलौं हो देखी सरंग के अन्हरिया
गदाल करै हो, उमडल मिशाल घटा करिया।

खेतॉ खम्हारी पर करमॉ के बोझा
पहिनें बतैलकै नय गामॉ के ओझा
फिसिर–फिसर हो, टपकै अघोन केरो झरिया।

सुटकल छै गाय–बैल उजरल बथान मॅ
कनकन बयार सोझे घुंसै छै कान मॅ,
सेमाय गेलै हो, गोयठा समेटै मॅ सरिया।

रसें–रसें झरिया के मोन बढ़ी गेलै
झरिये मॅं हमरॉ करोम जरी गेलै
बफाट करै हो, पातन पर लोटी कॅ अरिया।

फूल ऐसन बूतरू के हाथॉ मॅ लोढ़ा
चरकां तक जानै छै लीखै लॅ खोढ़ा
हुलास भेलै हो, झन–झन बजाबै छै थरिया।
डेराय गेलौं हो देखी सरंग के अन्हरिया.....

पहुनमां

सोभै छै अैंगना हमार हो द्वार ऐलै पहुनमॉ
नाची–नाची करबै विहान हो द्वार ऐलै पहुनमॉ।

सूरल से आगू कलम केरो ठाठी
कलमे छै दीया कलम छीकै बाती
हिनखै पे दुनिया के शान हो,
द्वार ऐलै पहुनमॉ।

अंग के अंगिका गौरवशाली भाषा
सरकारो मानतै इ हमरा छे आशा
यहा छीके हिन्दी के शान हो,
द्वार ऐलै पहुनमॉ।

हो बाबू भैया, अंगिका के नैया
हम्मे सबारी आपने सब खेबैया
अंगिका पे दीहो जरा ध्यान हो,
द्वार ऐलै पहुनमां।

दुयेगो संतान

जागो–जाग़ो हो किसान भैया, आपने मनो सें

सब किसान मिली खेती करबै, बुनबै गेहूँ धनमा
दाल–रोटी भर पेट खाय के, होली में गैबै गनमा
भूट्टा खेतो मे मचनमा आपने मनों सें,
जागो–जागो हो किसान भैया, आपने मनों सें।

रात कें सुतबै, भोर के जागबै, दिन–भर करबै काम
मेहनत से कहियो नै डरबै, लहू बहै, चाहे घाम
हमरो खेते बाबाधाम, भैया आपने मनों सें,
जागो–जागो हो किसान भैया आपने मनो सें।

अब नै सहबै हम्मे भैया विदेशी अपमान
जनसंख्या पर रोक लगैबै दूयेगो संतान
दोनों पढ़तै सुबहो–शाम भैया आपने मनों,
जागो–जागो हो किसान भैया आनपे मनों सें।
बोलो बोला, इन्कलाब भैया आपने मनों सें।

होली

जहिया सैं अैलै पिया मोर हो, भोर जल्दी हुयै छै।
ठोरों से बात करै ठोर हो, भोर जल्दी हुयै छै।

होली के बेरा हुलास खास जेरा
लौटै कोय नाग बनी, कोय छै सपेरा
भांगों मे लोग सराबोर हो, भोर जल्दी हुयै छै।

नैका ते नैका पुरनको बौराबै
जे आगू आबै छै ओकरा झोराबै
रगड़ै अबीर पोरे–पोर हो, भोर जल्दी हुयै छै।

गेहूँम के ओढ़ा गहूमें के पूआ
देवता आरो पित्तर से माँगें छै सब दूआ
पूआ के चापठों बेजोर हो, भोर जल्दी हुयै छै।

बड़ी मोन लागै जों सुतलों जगाबै
बहकौवा गीत तोड़ी–मोड़ी सुनाबै,
ससरै छै गोड़ों पर गोड़ हो, भोर जल्दी हुयै छै।
मौसम पर केकरो नै जोर हो, भोर जल्दी हुयै छै।

नया साल

रामनमी बिसुआ संग चैती–छठ, दुर्गा मेहमान हो
साल के बड़का बेटा चैता, सब गुण से गुणवान हो।

होली के हुड़दंग पे भारी, चैतारों महीना छै
कोयल कुहकै जखनी–तखनी, चैत के आपनो वीणा छै
गदरैलो सब रैची–छिमरी, खेतिहर के मुस्कान हो,
साल के बड़का बेठा चैता, सब गुण से गुणवान हो।

मंजर ऊपर आम टिकोला गम–गम–गम गमकाबै छै
बिसुआ में सत्तू चाखै ले, देव धरा पर आबै छै।
पोखरी पर चैती छठ–मैया के होय छै गुणगान हो,
साल के बड़का बेठा चैता, सब गुण से गुणवान हो।

चिड़ियाँ चुनमुन धोंस लगाबै चहचह खेत खम्हारी पर
नीम के टूसो चोभी–चोभी भारी रहै बिमारी पर
रामनमी में सिया राम से भरगर छै हनुमान हो,
साल के बड़का बेठा चैता, सब गुण से गुणवान हो।

हिन्दुस्तान

गुदड़ी घर में सूरज उगतै होतै नया विहान जी
सब देशो से गौरवशाली आपनों हिन्दुस्तान जी।

यहा समैया पल्टी खैतै माँटी, हवा–बयार हो
हरियाली खेतो में बसतै चिड़िया के भरमार हो
जण्ड़ा खेत में आठ बांस के होतै फेरू मचान जी
सब देशो से गौरवशाली आपनों हिन्दुस्तान जी।

गंगा–यमुना–कोसी मैया दुख–दुविधा कें झपलैतै
जे जेतना टा दुख सहने छै, ओकरों घर सुख उपलैतै
ज्ञान–मान–सम्मान से होतै शादी, श्राध, लियौन जी
सब देशो से गौरवशाली आपनों हिन्दुस्तान जी।

चिलका–बच्चा सेल कबड्डी, ताली–बित्ती खेलें खूब
विसुआ, फगुआ, सुकराती, छठ, जितीया परब मनाबों हूब
कन्ना गुज–गुज खेलतै रानी पकड़ी दोनो कान जी
सब देशो से गौरवशाली आपनों हिन्दुस्तान जी।

किल्ला खूटी-खूटी

पूजा पे बैढ़लों ते देवता सें ध्यान जाय छै टूटी–टूटी
हमरौं सोना के चिड़ैया, कानै फूटी–फूटी।

आर्थिक मजगूती अैतै बोलै सरकार किल्ला खूटी–खूटी
लागै खैनें छै जरूरे कोनो जड़ी–बूटी।

जन–गण कराहै लागै जिनगी के साँस जैतै घूटी–घूटी
ले के भागलै विदेशिया लूटी–लूटी,

हम्मे बेहाल हमरो देशो केरो लाल सपरै जूटी–जूटी
देखिहौं पटकी के अढ़ासबै ओकरा कूटी–कूटी

देखिहौं पटकी के अड़ासबै सभ्भे जूटी–जूटी

तीन रंगिया

आजादी के तीन रंग मॅं, रंगलौं धरती रानी कॅं
तीन रंगिया सैलूट करै छै, वीरों के कुर्बानी कॅं।

सड़सठ सालों के आजादी, सावा अरब आवादी हो
अभियो सीमा पर बेमतलव, बारूद के बरबादी हो
भारत के बलवीर दहाड़ै, लहू में मांटी सानी कॅं
तीन रंगिया सैलूट करै छै, वीरों के कुर्बानी कॅं।

विश्व गुरू भारत के बेटा, सगरे नाम कमाबै छै
जहाँ प्रेम सॅं हाथ मिलाबै, अपनों माथ झुकाबै छै
बीच में झगड़ा जे लगबाबै, धोपी दे छै हानी कॅं
बहुत जरूरी लाज बचाना, बीरों के कुर्बानी कॅं।

भारत छै आजाद मगर, गंगा कुहरै छै टिहरी मॅं
बोतल में पानी पानी छै, कहाँ छै पानी गगरी में
राष्ट्रीय धुन सुनाबै खिस्सा, सबकें अपनों मानी कॅं
तीन रंगिया सैलूट करै छै, वीरों के कुर्बानी कॅं।

गाँव मुहल्ला टोला–टोटी, घर–घर जोत जगाबो हो
खुदीराम, भगत, बापू रंग, नेता पूत उगाबों हो
चलों बचैबै अमर कहानी, हम्मूं फानी–फानी कॅं
तीन रंगिया सैलूट करै छै, वीरों के कुर्बानी कॅं।

मन झूमी कें

चुनमुन बोलै–2, मधुर रस घोलै, ते पूरबा बहै बयार–2
मन झूमी कें.....।
अखिया लागै, सपनमा जागै, ते सगरे लागै छहार
मन झूमी कें.....।

ओलती पे चहकै फुदो चिड़ैयां, टुप–टुप फोकै छै धनमा
सूरज के ऐलै ललकी किरनियां, टुह–टुह लागै विहनमा।
झुलुआ झूलै, सुगनमा बुलै, ते हौला लागै पहार
मन झूमी कें.....।

घांमों से छर–छर चुवै रूपैया, कलशी जैतै भराय हे
आबी विदेशिया, सब परदेशिया, देखी जैतै बौराय हे
पछिया झोलै, ते नैया डोलै, ते मनमा होलै उलार
मन झूमी कें.....।

घरों के नुनियाँ दोनों बहिनियां, दिन–भर करै पढ़ाय हे
धनमां काटी कें पनमां खैबै, बिछियो देबै गढ़ाय हे
मैयो गाबै, बहिनियों गाबै, ते भैयो गाबै मल्हार
मन झूमी कें.....।

फेरू ऐलै

लागै छै वोटों के दिन फेरू ऐलै
वैसने पुरनका ठो सीन फेरू ऐलै।

सनकल दिमाग, आग धधकै छै बात से
मुर्गा–पे मुर्गा, हलाल काल रात से,
इ गल्ली उ गल्ली, एंगना हियाबै
देह गात लागै कि जीन फेरू अैलै।

पचटकिया नेता के, लखटकिया गाड़ी
थोंथनों से लार–लेर पीबी के ताड़ी,
पुड़िया चिबाबी के, जीत–गीत गाबी के
हमरा बराबै लें घीन फेरू ऐलै।

लटर पटर बोली ते लागै छै ढीठ के
करिया मिशाल दाग झलकै छै पीठ के
पाँच साल पहिनें जे खैनें छै किरिया,
ओकरा पर मारै लें पीन फेरू ऐलै।

गोरख धंधा

सबसेँ बढ़ियां छै धंधा, गोरख धंधा।
बिना पूँजी के चलतै, कभी नै मंदा
सबसेँ बढ़ियां छै धंधा गोरख धंधा।

चाय–पान गुटखा उधारे में पार हो
धुईया उडाबी के हाकथौन फरार हो
मछरी के धंधा बहुत गंदा
सबसे बढ़ियां छै धंधा गोरख धंधा।

खैनी, जों बेचो ते चूना झमेला
दारू के धंधा मेँ खाकी के खेला
वेलडिंग में दिनों के बनी जा अंधा
सबसेँ बढ़ियां छै धंधा गोरख धंधा।

होटल के धंधा मेँ, कत्ते न लटपट
खोंचा उठाबोँ, सिपाही मेँ सटपट
नौकरी मेँ चाही मुस्तंड कंधा
सबसे बढ़ियां छै धंधा गोरख धंधा।

नौकरी जों मिलथौन तेँ तन्खा लेँ झक्खों
तीन केरो तेरह उधारे मेँ कक्खों
दुर्गा काली के चढ़ाबो छंड़ा
सबसेँ बढ़ियां छै धंधा गोरख धन्धा।

बनभे कवि ते कविता सुनाबो
आगू की पीछू संचालक हियाबो
घरनी जों रूसथौन मलो हंड़ा
सबसेँ बढ़ियां छै धंधा गोरख धंधा।

टुकुर-टुकुर

टुटुर–टुकुर ताकै छी सरंगो के ओर।
हमरोँ विधाता छै एतना कठोर।।

हमरे अलोधन पर टिकलोँ छै खेल
पेटोँ के पटरी पर दौड़ै छै रेल
संघरी के सुसुम–सुसुम टपकै छै लोर।

तरबा हसोतै तेँ रूपा के ढेर
कमियां कमासूत केँ फेरे पर फेर
घुड़की के लागै छै पित्तर केँ गोड़।

ठनका सेँ बमबारी, लोढ़ै छै जान
मरला केँ मारी, कहाबै भगवान
काँखी तर दाबने छै जिनगी के भोर।
हमरोँ विधाता छै एतना कठोर।।

छांहीं में

गोरी के चुनरी उड़ी–उड़ी गेलै, फसलै हमरो बाँहीं में
केना के चुनरी लेभे हे गोरी हम्में आपनों पाहीं में।

झटपट काटौं जूना भी बाँटो, बोझा बान्हों कस्सी के
केतनों थकलौं रहो हे गोरी, बोलौं–बाजो हाँस्सी के
बोझा के गिनती नै भुतलैहो, सीधे जोड़िहो गाही मे
मनगर–मनगर काटौं हे गोरी, हम्मूं आपनो पाहीं में।
गोरी के चुनरी उड़ी–उड़ी गेलै, फसलै हमरो बाँहीं में।

पातरो अड्डा बगल में खद्दा, रस्ता टेढ़ों–मेढ़ों हे
सबके माथों सब रंग बोझा, सबके आपनों जेरो हे
सम्हरी–सम्हरी चलो हे गोरी, बौझा नै गिरहौन ढाही में
धरी के तन्टा ओहैं जिरैबै, बूढबा गाछी के छाहीं में

फूटलै चूड़ी, टूटलै झुमका, थकलै सबके तन–मन हे
कटनी–बंघनी पूरा करी के देभौन नया अलोधन हे।
मुन्ना के टीका, मुन्नी के टीका दे देना छै बाँही मे
दौड़ी के चुनरी ले जा हे गोरी, हम्में आपनो पाहीं में।
गोरी के चुनरी उड़ी–उड़ी गेलै, फसलै हमरो बाँहीं में।

सुख के भुरूकबा

अखिया गेलै पथराय हो, कहिया उगतै सुख के भुरूकबा
चौकै छी रोजे विहान हो, देखी सरंग केरो सूरूजबा।

बड़का के आन–बान–शान छेकै छोटका
भूखलो मरै ते, बताबै छै खोटका,
घरों के बूतरू भोक्कार पारी कानै
कैसें के जीतै गरीब्बा हो, देखी सरंग केरो सूरूजबा।

माँथो पर टोकरी, ते के पूछै नौकरी
हीरा–सरल जी, कहै ढकरी–ढकरी,
कर्जा पे कर्जा कटोरी में भूरकी
फाटै छै हमरों करेजबा हो, कहिया भरतै हमरौं सन्दूकबा।

जाड़ो में जाड़, हाड़ थर–थर कापै छै
रेखा खींची के गरीबी नापै छै,
तड़पै आजादी मियादी बुखार सें
उछलै छै चहकी अंगरेजबा हो, लगै ओढ़ी चलौं सलूकबा।

गंगा के पानी

लहर–लहर उमकै छै, पूर्वज के वाणी
माँटी में जान धरै, गंगा के पानी।

देहों में फुरती छै, धन्य–धन्य धरती छै
जन्हूं के जंघा सें, पानी सन मुरती छै
हर दिन उपवास करै, पावन रमजानी
भारत के भूमि पर, गंगा के पानी।

युगयुग सें चूमीं कें, भारत के भूमि कें,
दोनो कछार धार, छूवै छै झूमी कें
सागर के कोख भरै, शांतनु के धानी
भारत के भूमि पर, गंगा के पानी।

चटकल जंजाल होलै, पानी पाताल होलै
टिहरी लबालब छै, गंगा पैमाल होलै
सबकुछ दहाबै कपूत जानी जानी।
भारत के भूमि पर, गंगा के पानी।

अभियो ई तारै छै, केकरों नय धारै छै
बून्द–बून्द पानी से, अमृत रस गारै छै
ताज विना राज करै, जल के महारानी
भारत के भूमि पर, गंगा के पानी।

कोरोना

कानै! सौसे दुनिया, अखनी, भोकरी–भोकरी.
मारै कोरोना झमारी कें, पकरी–पकरी।

चीन में जनम होलै, चीनें मॅ जुवान हो
जिनगी हसोती लेलके, बनी कें हैवान हो।
भागे लगलै लोग छोड़ी–छोड़ी नौकरी...
मारै कोरोना झमारी कें, पकरी–पकरी।

थपरी बजैलियै हो, थरियो बजैलियै
नाक–मुँह झांपी–पोती ऐंना सॅ लजैलियै।
कानै! दूर रही नूनियां, हकरी–हकरी...
मारै कोरोना झमारी कें, पकरी–पकरी।

डागडर–नर्स केरो खतरा मॅ जान हो
सिपाही के साथें सरकारो परेशान हो।
लॉक डाउन फेरा में, बकरी–छकरी.....
मारै कोरोना झमारी कें, पकरी–पकरी।

आपनों ईलाज आबें आपन्हैं से करबै
काम–धाम चालू करी, बनी ठनी–रहबै।
तोड़ी–तोड़ी लानबै, खेतो से ककड़ी....
मारै कोरोना झमारी कें, पकरी–पकरी।

तिरंगा

ठण्ढा रहै माहौल, तें चकमक करै चमन
सब लोग खिल–खिलाबै, छोड़ी–छोड़ी कें भरम
पुर्वज के करिश्मा सें इ ऐलो विहान छै
हाथों में तिरंगा लेने हिन्दुस्तान छै।

कश्मीर के घाटी में दिबालों पे दहाड़ै
रात अन्हरिया कॅ मेशाइल से उड़ाबै
सीमा पे जबानों के हौसला जुआन छै।
हाथों में तिरंगा लेने हिन्दुस्तान छै।

सीमा पे दोस्ती के कसम तार–तार जी
लहुवों सॅ मिटाबै छै लिखलका करार जी
लागै ओकर नसीब में कब्रिस्तान छै
हाथों में तिरंगा लेने हिन्दुस्तान छै।

नयका सूरज

औंघै छै आसन पर बैठी, भारत के भगवान जी
एपीएल बीपीएल में ओझरैलॉ अभियो हिन्दुस्तान जी

कलपै माय कटोरा लेके, विश्व बैंक के दुआरी पर
सेखी टिकलो छै राजा के अभियो तलक उधारी पर
जेकरो जेतना करनी छोटो, ओतने बड़ों मचान जी।
एपीएल बीपीएल में ओझरैलॉ अभियो हिन्दुस्तान जी

खोजी–खाजी, कहाँ–कहाँ से बिजनसमेन बोलाबै छै
ओकरा लूट के छूट मिलै, हमरा पे छड़ी डोलाबै छै
धुक–धुक हमरो साँस चलै छै, धक–धक ओकर दुकान जी
एपीएल बीपीएल में ओझरैलॉ अभियो हिन्दुस्तान जी।

हमरा तेल लगाबै वाला, हमरे तेल चुलाबै छै
एक काम फरियाबै खातिर, साले–साल झुलाबै छै,
वहा पुरनका वादा रोटी, कपड़ा आरो मकान जी
मोटके भेलै मोटों आरो, लिक–लिक हिन्दुस्तान जी।

सीमा पर निर्धन के बेटा सबदिन खून जराबै छै
राजा के एक्को टा बेटा, भरती कहाँ कराबै छै,
जोन दिना राजा के बेटा, होतै लहू–लुहान जी
उ दिन नयका सूरज उगतै, सौसे हिन्दुस्तान जी।

काँवर

पिया हो देवघर जैबै, भोला हमरा बोलाय–2
गोरी हे, हमरा भी आपनोँ साथें लीहो लगाय।–2

लानी दीहोँ चुनरी केसरिया, जैबै साथें बाबा नगरिया
सुलतानगंज सावन में जायके, भरबै गंगा जल के गगरिया
गौरा–शंकर के झमकौवा गीतबा सुनाय।
पिया हो देवघर जैबै, भोला हमरा बोलाय–2
गोरी हे, हमरा भी आपनोँ साथें लीहो लगाय।–2

कोनी घाट में काँवर भरबै, कोन घाट से जोल उठैबै
कोनी होयकेँ रस्ता बढ़ियाँ, कहा पे तनटा मोन थिरैबै
कहाँ मेँ ठंढ़ा–ठंढा पानी, कहाँ मेँ दोनो खाय।
पिया हो देवघर जैबै, भोला हमरा बोलाय–2

सीढ़ी घाट मेँ काँवर भरबै, वहीं सेँ कान्हों जोल उठैबै
ओभर ब्रीज, नारदपुल देकेँ, कमराय–मासूमगंज हे ऐबै
वहीं पेँ पीबी ठंढ़ा पानी, लीहोँ सुसताय!
गोरी हे हमरा भी आपनोँ साथें लीहो लगाय।–2

लम्बा रस्ता रात अन्धरिया, उप्पर सेँ सावन के झरिया
बड़की मैयो बोलै छै कि, सुईया छै सचमुच मेँ सुईया
कैसे पार उतरतै हमरो बेड़ा दै बताय
पिया हो देवघर जैबै, भोला हमरा बोलाय–2

सावन छै शंकर के दिवानी, यहाँ लेली बरसाबै पानी
भोला के महिमा छै ऐसन सुईया पार करै छै फानी
बोल–बम, के नारा देभौन मंतर रटाय
गोरी हे हमरा भी आपनोँ साथें लीहो लगाय।–2

उत्सव

आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।
तिरंगा के रंग मेँ रंगाबोँ हो भैया।
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।

दुश्मन के अच्छा नैं झलकै रबैया
इ सुतलोँ शहर केँ जगाबोँ हो भैया।
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।

जों लहरै तिरंगा तेँ, उमड़ै छै गंगा
ई गंगा के महिमा सुनाबोँ हो भैया।
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।

धरती लेली पानी, पानी, लेली बादल
बादल लेली पौधा, लगाबोँ हो भैया।
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।

प्रकृति छै रूसलोँ, बरसा घर मेँ घुसलोँ
ई रूसलोँ सबासिन हँसाबोँ हो भैया।
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।

हो नेता, भगत सिंह, खुदीराम, जैसन
घरे–घर फौलादी बनाबोँ हो भैया।
आजादी के उत्सव मनाबोँ हो भैया।

कौआ नहौन

जहिया सें होली के होलै लियौन
सब घर भेजाबै छै नौता–पिहौन।

भोरे जे जागै ते सूरज निहारै
आमोॅ के गाछी–तर मंजर बुहारै
सरसों से खेलै विहानें–विहान
दोनोॅ नहाबै कौवा नहौन।

फागुन के खटिया में चैती के पौवा
छीटे बसंती महक गमकौवा
ससरी कें पसरी मेटाबै थकौन
साथे नहाबै कौवा नहौन।

भांगोॅ कें मस्ती में चैती बौराबै
दौड़ी अधरतिया फागुन घर में आबै
चाफटोॅ पारी–पारी चोभै पकवान।
रंग सें नहाबै कौवा नहौन।

होली

गोरी के चुनरी रंगी–रंगी गेलै, रंगलै सब कुछ होली में
बहकल–बहकल बात करै छै मस्ती छै भंग गोली में।

जेकरो गोरी जेतना भोली, होकरै गोरी चोरी हो
बुरा न मानो बोली–बोली, मनमाफिक बरजोरी हो
नयका साथ पुरनका भिरलै, नयकी साथ ठिठोली में,
रसगर–रसगर बात भरल छै, होली के कर झोली में।

झटपट सानोॅ पूआ भी छानोॅ, फाँड़ा बान्हों कस्सी के
केतनों थकलोॅ रहो हे गोरी, बोलोॅ–बाजो हाँस्सी के
टोला के भोला कुच्छू जो बोलै, संयम राखिहो बोली में,
बहकल–बहकल गाबै–बजावै, मस्ती छै भंग गोली में।

कसकल काया मसकल चोली, होली केना मनैबै हो
सब ते आपनोॅ राग अलापै, हम्मे कोनची गैबै हो
सबके बीहा होलै हम्में, बैठबै कहिया डोली में,
बहकल–बहकल बात करै छै मस्ती छै भंग गोली में।

फूटलै चूड़ी, टूटलै झुमका, खुललै केना मुरेठा हो
कौने जे भिरलै केना के गिरलै लागलोॅ छीलै अमेठा हो
बड़की, या छोटकी मे गलती, नै ते छै मंझोली में।
बहकल–बहकल बात करै छै, मस्ती छै भंग गोली में।

गुलबिया : कवित्त

ज़िनगी मॅ बारी–बारी सुख–दुख पारा–पारी
दुख मॅ भी नजरी पॅ नाचै छै गुलबिया

होली के उमंग मानें हित–मित संग गाबो
प्रीत रीत–गीत मॅ नहाबै छै गुलबिया

देखी के बसंत दाँत पीसै योगी–संत तबे
फागुन के ऐंगना मॅ मातै छै गुलबिया।

थकलॉ रहो कि मोन धीपलॉ सुसुम लागै
तरवा के लहर उतारै छै गुलबिया

रंग रंगरेजबा से लानी फुचकारी भरै
देखी कॅ छलांग तबें मारै छै गुलबिया

लाले–लाल ठोर हारा–पीरका पटोर पीन्ही
करका के अंगुठा देखाबै छै गुलबिया

मांतलो जो लागै, हाथ घीची–घीची भागै
आरो सुतला मॅ चढ़ी झकझौरै छै गुलबिया

आँखी केरो पीपनी जे देखी–देखी नाच करै
आँख मारी आँख भरमाबै छै गुलबिया।

छोड़ी–छोड़ी भागी गेलै, होस जब आबी गेलै
होस में पुरनकी कहाबै छै गुलबिया।

कश्मीरी

बड़ी बढ़ियां इ तिरंगा के सजावट लागै
यही मंचो से मिलन गीत के आहट लागै
इ अजादी के सवालों पे भला की कहना
जहाँ गाछी पॅ चिड़ैया के अदालत लागै।

यहाँ जुम्मन, यहाँ जबरा, यहाँ लचिका रानी
यहाँ माँटी के सुराही में सेराबै पानी।
सभें धर्मो के पसीना से बिनावट लागै।
हर सूता मैं शहीदो के लिखावट लागै।

यहाँ ऐंगना, यहाँ देहरी, यहाँ तुलसी चौरा
यहाँ झिंगली के अलानी पे जुड़ाबै भौरा
यहाँ कहियो नै जवानों के थकावट लागै
जहाँ गाछी पे चिड़ियाँ के अदालत लागै।

माहिया (12,10,12)

मौसम के पहेंली मॅं
बादल नितराबै
सावन के हवेली मॅं।

सूरज जागी भोरे
उतरी के आबै
सजबै सूरत तोरे।

आँखी के कछारी मॅं
काजर पसरैलो
माखन छै दाढ़ी मॅं।

अैलै लपकी काकी
घोघो तानी कॅं
हुलकै सगरे–ताकी।

नटवर नाथै विषधर
दौड़ी सब आबै
छोड़ी–छोड़ी कॅं घर।।

घनश्याम कदम गाछी
बंशी कॅं टेरै
दौड़ै बाछा–बाछी।

खटरूस टिकोला पर
कोयल कूकै छै
या मंजर होला पर?

अभिमान तिरंगा पर
हाँसी के गमैबै
ई जान तिरंगा पर।

करिया लागै बांके
गोरी सब सखिया
टुक–टुक ताके–झांके।

कानै चिकरी चॅगना
मैयों जे गेलै
सूनों भेलै अॅगना।

फागुन के खुमारी छै
गदगद पछिया के
बहसल सिसकारी छै।

बड़ा दिन

मुबारक हो सबके बड़ा दिन भैया।
इशु के जनम पर लुटाबो बधैया।
मुबारक हो सबके बड़ा दिन भैया।

रब्बी के टूसी, जुआनी पर पूसी
नय गाँती नय टोपी इ कनकन समैया।
मुबारक हो सबके बड़ा दिन भैया।

जों लहरै तिरंगा तें, उमकै छै गंगा
ई गंगा के महिमा सुनाबों हो भैया।
मुबारक हो सबके बड़ा दिन भैया।

धरती लेली पानी, पानी, लेली बादल
बादल लेली पौधा, लगाबों हो भैया।
मुबारक हो सबके बड़ा दिन भैया।

दुश्मन के अच्छा नैं झलकै रबैया
इ सुतलों शहर कॅं जगाबों हो भैया।
मुबारक हो सबके बड़ा दिन भैया।

दोहा

अंग अंगिका माय के, बाइस जिला बथान।
घूमै देश विदेश में, हर बेटा रथवान।।

आदि कवि शुरूआत के, सरहपाद कुल धाम।
राहुल सांकृत्यायनें, रखै अंगिका नाम।।

प्यारी पाँच करोड़ के, भाषा में गुण चार।
रसगर, मिठगर, सोधलों, अवतारी दमदार।।

सुतभों तँ के जोगथौं, गौरवशाली ताज।
लूझै लें दम साधनें, अड़ियैलों छै बाज।।

गंगा सुखलों जाय छै, खोजों मिली उपाय।
बोतल के पानी भला, कबतक प्यास बुझाय।

पढ़ो तँ बढिया सँ पढ़ो, सीखो बढ़िया लूर।
नै तँ बढ़ियों बात मँ, निकली जैथौं भूर।।

मंदिर मे घंटी बजै, गाँजां गमकै रोज।
मोटों चंदा जेब मँ, परसादी के भोज।

फाँसी लगै फकीर कॅ, आतंकी कॅ बेल।
धन्य न्याय के धाम मँ, अलबत्ता सब खेल।

कुर्सी, पगड़ी सोहरत, समय समय के फेर।
ऐंतै जैतें नय लगै, पिचकी टा भी देर।।

चलों हिलैबै जोर सें, तभिये टुटतै ध्यान।
जैसें माँझी बीच में, झारै अपनों शान।।

कत्तों खरियैलों रहें, हरहर, धमना सांप।
जोखिम केरों बात नय, चाहे कत्तों चांप।।

नीपल–पोतल पर चलै, झाड़ू कें अभियान।
ज्ञानी कें होतै अहो, कहिया औवल ज्ञान।।

सुखलों दरकल ठोर पें, सुखलों आँखी लोर।
खौजै छै मुस्कान सब, टी.भी. चारों ओर।।

कनफुसकी के बात पर, भाय–भाय में रार।
भोथों प्रीत–सुरीत सब, भोथों भाव–विचार।

कुइयाँ देखी कें लगै, प्रोग्रामर कें प्यास।
रिश्ता आप्पन मोंन कें, आम रहै या खास।।

किनका झलकै छै अहो, प्रोग्रामर के लोर।
सब चाहै छै सीझलों, बाबा–राज चकोर।।

हौंर चलै खुर–खुर करै, कातिक चाहे जेठ।
हौंर, बैल, हरवाह कें, दरद न जानै सेठ।।

धरती में भुरकी करी, चापाकल लगबाय।
टिहरी में कुहरी रहै, पावन गंगा माय।।

पूजा होली ईद में, गजब तमाशा रोज।
साटन पर साटन मिलै, चलै सियासी भोज।।

बैठल छै चौपाल पर, धकियल सन वैताल।
टेबी–टेबी कें करै, अप्पन गोटी लाल।।

नय छप्पर नय ओलती, नय छप्पर पर खोंर।
चिड़ियाँ–चुनमुन चोंच सें, कहाँ बनैतें घोंर।।

डोली पर के दूलहा, पीवी कें बेहाल।
धड़फड़ सास कहार कें, सेंकी देलकै गाल।।

मुर्गा फारम नाँकती, कौरव के संतान।
मुर्गे नाँकी कूकरू, पारि देलकै जान।।

रामायण मे राम कें, रानी तीनों माय।
तैयो जेठों पूत कें, चौदें बरस सजाय।।

कुर्सी–कुर्सी खेल में, जनता गिरै धड़ाम।
पूजो हाकिम गोड़ कें, धरलों पाँच खड़ाम।।

मुकरी

1 भाषा के ज्ञानी अलवेला
कत्ते साथी कत्ते चेला
अंग अंगिका के चरवाहा,
बुझलौं 'सूरो', नय 'कुशवाहा'।

2 कला मंच के पंच अनोखा
सबके लेली खिचड़ी चोखा
बाईस जिला अंग परदेश,
बुझलौं दिलवर, नय नय 'गुरेश'

3 चैत मास मे सबके भावै
तीता लेकिन चैती गाबै
गुद्दा कम तासीर असीमा,
की रे खीरा, नै हो निम्मा।

4 अँथै चकमक–चकमक लागै
बोलै छम–छम की–की गाबै
सब दिन से घर–घर के गहना,
बुझलौं पायल, नै हो पहुना।

5 चटर–पटर खिस्सा गप मारै
छलमल–छलमल खाट पसारै
झटपट–झटपट जारों चुल्हा,
बुझलौं समधी, नय जी दुल्हा।

6 गोल–गोल मट्टी के काया
लाल पुरानौं फेरू नाया
भरी–भरी मुँ आगीन झोकना
अरे खोरनी, न सखि बोकना।

7 तीन फूट के लहंगा डोरी
टुकड़ा–टुकड़ा जोरी–जोरी
साड़ी के नीचे मे काया
की सखि चुनरी, नय सखि साया।

8 गम–गम गूड़ मिलाबौं आटा
खाय खिलाबौं कुछ नै घाटा
रंग अबीर भंग के गोली,
की सखि पूआ, नय सखि होली।

9 नैका चाउर नैका आटा
नै आंठी नै एक्को काटा
बगुला, पेड़ा मिट्ठो–मिट्ठो,
बुझलौं लड्डू, नै जी पीट्ठो।

10 चिकनौं पियर पातरौं छिलका
बिना दॉत चभलाबै चिल्का
नै बिच्चा नै कोय झमेला,
अरे पपीता, नै जी केला।

11 चिलकौरी के गोदी चिलका
छिमरी फॉड़ी फेकै छिलका
देह हसोतै चन्दा गोरी
की सखि झुम्मर, नयजी लोरी।

12 घरती पर नयका मेहमान
ढोल बजाय के मंगल गाण
मीत–प्रीत पर मारौं मोहर
जानलौं वोट, नै जी सोहर।

13 बोर बराती बहकै चहकै
पाँच डेग तक दारू महकै
खाली–खाली छै जनवासा
की सखि बोतल, नय जी ताशा।

14 भरै उड़ान नया बछिया जब
कनकन हवा बहै पछिया जब
घूर जलाबों आगिन बारी
की सखि गोबर, उहूं अमारी।

15 चिकरी–चिकरी सौंसे टोला
बिना नाप के कुर्ता झोला
भोट–भाट में बड़का झोटा
एकरा देभो, सीधा नोटा।

16 रात अन्हरिया गुज–गंज कांपै
डेग–डेग सें रस्ता नांपै
चिकरी बोलै, जागै बहरा
की सखि पागल, नय सखि पहरा।

17 देखी कें लागै अलवत्ता
अखनी पटना, झट कलकत्ता
बटन दबाबौं कटथौन धोन
की सखि बिजली, अरे सखि फोन।

कुण्डलियाँ

1

गंगा सुखलौं जाय छै, खोजौं मिली उपाय
नै तें बालू में सुनो, जैथौं गंग विलाय
जैथौं गंग विलाय, रसातल में सब जैभें
लागै खेत हरंठ, कहौं कोन्चीं सब खैभे
चौके रोज 'सुधीर', खिचैलें आप्पन अंगा
करौं सफाई खूब, बनाबो निर्मल गंगा।

2

बूढौं हमरो बाप छै, बूढ़ी हमरी माय
बिन दॉतौं के भात कें, मत्थी–मत्थी खाय
मत्थी–मत्थी खाय, पेट तें गुड़–गुड़ बोलै
बच्चा बुतरू बात–बात, में लोलै–दोलै
खुट्टी भरै 'सुधीर', अमारी आगिल ढूढ़ौं
बैठी तापै आग, बथानी बच्चा–बूढ़ौं।

3

बिजली पानी चाहियो, सबके छै दरकार
खुद्धन बिजली पोल पर, की करतै सरकार
की करतै सरकार, तार सें तार निकालै
साहब मैडम साथ, रूपिया रोजे चालै
धक–धक प्राण 'सुधीर', देहरी पर छै कजली
जनता बनै गुलाम, घरो के रानी बिजली।

4

गाभिन गाय बजार में, लावारिस मड़राय
मालिक गारी दूध सब, साँझै भोरे खाय
साँझै भोरे खाय, मगर पानी नै सानी
गाय कहाबै माय, बथानी कानी–कानी
कह 'सुधीर' समझाय, गुसाही भेलै मैया
जादे करभो तंग, हुलाठी देथौं भैया।

5

अच्छा दिन के फेर में, नरभस गाँव समाज
सब दिन जे लूटै यहाँ, ओकरा कोंची लाज
ओकरा कोंची लाज, बहन्ना कुछ नै बचलै
अच्छा दिन के शोर, समुचा देश में मचलै
चीकनों करम धरम, स बढ़तै बुतरू–बच्चा
सब दिन रहतै ठीक, यार अच्छा से अच्छा।

6

अगुआ के चलती अभी, लगन बड़ी पुरजोर
बरतुहार छोटौं–बड़ौं, लागौं सबके गोड़
लागौं सबके गोड़, मगर अड़चन पैं अड़चन
माँगै में की लाज, समझतै समधी समधन
अकबक करै 'सुधीर', जेठ में खेलै फगुआ
धोती लाले–लाल, पान चभलाबै अगुआ।

7

बाल दिवस पर बाल के, सड़ल–गलल चकलेट
काजू किसमिस से भरल, साहब जी के प्लेट
साहब जी के प्लेट, ग्लास में ललका पानी
बच्चा भागै घोर, भुखैलों कानी–कानी
पारा चढ़े 'सुधीर', अकल्ले लागै बेबस
आयोजक जी धन्य, मनाबै एहिनें दिवस।

8

चिड़ियाँ चुनमुन खेत सें, गेलै कहा बिलाय
फींका धेनू गाय के, माखन दूध मलाय
माखन दूध मलाय, मिलावट सोची–सोची
अनजाने सब लोग, खाय छै कोची कोची
सँभरी के रहमे 'सुधीर' ते खूब बढ़ियाँ
नै ते वहिने हाल, जना खेतों के चिड़ियाँ।

9

चैनल के भरमार यहाँ, घर–घर मैं रीमोट
प्रत्यासी के बेश में, चैनल माँगे वोट
चैनल माँगे वोट, रेट पर आनाकानी
जन्ने जत्ते वोट, वहाँ ओतने मनमानी
धड़फड़ करै 'सुधीर', मैच अखनिये फाइनल
जल्दी करो रिचार्ज, चलाबों टटका चैनल।

10

न्यालय में मिरगी लगै, छै दलाल के लूट
केस पड़ोसी लोग के, लेना भी छै छूट
लेना भी छै छूट, त गहकी खूब बढ़ाबों
झूठ–मूठ के बात, भयारी रोज लड़ाबों
कह 'सुधीर' दू टूक, बनाबों घर कें आलय
सावधान भुली कें, नै जहियों कोय न्यालय।

चेक काटी के

तोंय तॅ दैछौं चेक काटी कें
हमें दैछी पेट काटी कें
हमरॉ घाव के मरहम कें भी
चाटी गेल्हे सब चाटी कें।।

हमरॉ खून–पसीने सें ही
जिन्दा अखनी लोकतंत्र छै
ताज के लाज केना के बचतै
भकुवैलॉ सन तंत्र–मंत्र छै,
जब–जब हम्में हक् मांगै छी
मारै ठोकर डाँटी कें।
हमरॉ हिस्से के सूरज भी
झपटै छो बाँटी–बाँटी कें।
आपने देलिए चेक काटी कें
हमें देलिए पेट काटी कें।।

चोर–चोर के संघ बनाय कें
जनमत लूटै, कुर्सी लूटै
ओकरॉ घर के बेडरूम में
चूड़ी निर्मोही के टूटै,
खाय रहलॉ छो केक काटी कें
हमरॉ सौ परसेन्ट काटी कें।
नया दोशाला झक–झक तोरॉ
हमरा लें चिप्पी–साटी के।
आपने देलिए चेक काटी कें

जनता खेवनहार बनैलकै
दिल्ली के दिलदार बनैलकै
ओकरॉ खून लगै गड़बड़ जे
मुल्कॉ के गद्दार बनैलकै,
हमरॉ घाव के मरहम के भी
चाटी गेलै चाटी–चाटी कें
तोहें खाय छो छांटी–छांटी के
हमरा लें घांटी–घांटी के।
आपने देलिए चेक काटी कें
हमें देलिए पेट काटी कें।।

माय-बेटी

जाग नुनू भोर होलै, जाग हो
सुतला से सुती जैतों भाग हो।।

कनकन ठहार होलौ बोरसी के धाव
तोरहै तें भरना छौं बापों के घाव
गहली कें बोलै छौं काग हो..
सुतला से सुती जैथौं भाग हो।

बुलै के लूर होलौं, खेलै के मीत
सबटा परीक्षा में जीत नू–नू जीत
सरपट मेटाबों सब दाग हो..
सुतला से सुती जैथौं भाग हो।।

हमरों गरीबी पर मुस्कै महाल
मातै छै आगू में सचकुलबा काल
तोरहौं डरैथौं ई नाग हो.
सुतला से सुती जैथौं भाग हो।।

इतिहास

है कहिनों इतिहास लिखै छो
आपन्है तुलसीदास लिखै छो।

कूइंयाँ में पलथी मारी कें
कुइंयें रंग आकाश लिखै छो।

उलट–पुलट पन्ना देखी कें
दोसरा धन के खास लिखै छो।

बादशाह, वेगम, गुलाम कें
जोकर वाला तास लिखै छो।

जेकरा ज्ञान चवन्नी भर नै
हुनका एम–ए पास लिखै छो।

भाषा छै भगवान सें उप्पर
केकरा ले परिहास लिखै छो।

लूर देने छौं, बढ़िया सोचों
बेमतलव बकबास लिखै छो।

गाँव आबें

मत हियाबें
गाँव आबें।

बाल–बच्चा
घर सजाबें।

लोर आँखी
के सुखाबें।

अन्न धन पर
सिर झुकाबें।

दर्द मेँ भी
मुस्कुराबें।

अं–गजल कॅ
गुनगुनाबें।

पेड़ पौधा
सब लगाबें।

ढोल–बाजा
चल बजाबें।

होतै हल

होतै हल
आय न कल।

इज्जत के
रस्ता चल।

द्वारी पर
नल के जल।

रेत बहै
खल–खल–खल।

बढ़िया कें
बढ़िया फल।

बल्हैं नै
कर तलमल।

दलबदलू
करथौं छल।

कलें-कलें

चलना छै ढेर दूर तॅ चलबै कलें–कलें
जेनां कि डेग बुतरूआ बढ़बै कलें–कलें

सोना के ढेकरी मॅ नगीना कहाँ लगै
गहना बनै के चाह मॅ, गलबै कलें–कलें

चलतें रहै छै सांस जे ओदाद के बिना
नुस्खा चलै के सांस सॅ, पढ़बै कलें–कलें

घरती छै ई जे अंग के, बेटा बनी–चलों
थकली छै, गोड़ माय कें मलबै कलें–कलें।

जगमग करै इ अंगिका के घोर खातरें
दीया बनी कॅ रात भर जलबै कलें–कल

अनगढ जो जिन्दगी रहें तबें कि फायदा
लूरगर के ज्ञान–साँच मेंं ढलबै कलें–कल

हरैले

जहीया सॅ आँखी के पानी हरैलै
पुरानों–पुरानों कहानी हरैलै।

बुतरूआ लॅ रोटी के फेरा मॅ साहब
कमैतें–कमैतें जुवानी हरैलै।

गरीबी जे फैसन के रंग में रंगलकै
मडैया के छपरी–पलानी हरैलै।

सुराही के पानी, उ गाछी के झुलुआ
इ छाता के असली कमानी हरैलै।

पुरनका के तोड़ी नया घोर उच्चों
बनाबै मॅ दोनों परानी हरैलै।

कमीयां के फेरा पे फेरा छै अहिनों
बसुल्ली मिलै तॅ रूखानी हरैलै।

टनाटन बताबै तखनको पढ़लका
पहाड़ा समुच्चे जुबानी हरैलै।

अकल्ली जान

इनोरिया रात झरोखा सें झात–झात करै
जेना चितचोर चकोरी सें मुलाकात करै।

अकल्ली जान छी निमझान, चाँन ऐंगना में
रही–रही कें हवा देह पर आघात करै।

आँख मौलै तें नीन्द आबी कें कुढ़ाबै छै
फेरू कानों में विरह–वेदना के बात करै।

कहीं भुक–भुक करै तारा कहीं सितारा भी
मिली–मिली कें खटोला कें पीछू सात करै।

मिली कॅ मेघ सें हमरों कथा सुनाबै छै।
टुकुर–टुकुर कें निहारी नजर सें बात करै।

ठनका गिरावें

बदरा रे!.. ऐंगना मे आबें तॅ जानौं
हमरो दरद में समाबें तॅ जानौं।

पिया दूर परदेश गेलै तॅ गेलै
हुनको संदेशा सुनाबे तॅ जानौं।

विजली जों छिटकै नजर चौंधियाबै
नसीबों के बिजली जलाबें तॅ जानौं।

यहाँ बेग, झिंगुर तॅ गैबे करै छै
नागिन सें सोहर गबाबें तॅ जानौं।

गरीबों पे ठनका गिराबै छैं कहिनें
गरीबी पे ठनका गिराबें तॅ जानौं।

उजाड़ सन लगै

सपना के घोर छारलौं उजाड़ सन लगै
बादल से प्यार शेर के दहाड़ सन लगै।

बिचड़ों बुनै अछार तॅ झलकै हरा किचोर
झरिया बिना इ साबनों सुखाड़ सन लगै।

धरती किसान खातरें अचरा पसारने
साहब के बात आभियो, लताड़ सन लगै।

गोरो छै चमड़िये मतर, करिया विचार छै
ओकर नजर में घूसलों जुगाड़ सन लगै।

बाढों में सुखाड़ों में, पछिया–बयार में
हरमां–हरान जिन्दगी पहाड़ सन लगै।

हायकु

(5,7,5) अक्षरी
(रमता–3, जोगी– 2)

रमता जोगी
बड़का मोबाइल
असली ढोंगी

लॉक डाउन
सगरे घुन–सुन
कोरोना धुन।

अंग अंगिका
हमरो मातृभाषा
उच्चो सिका।

बेशी देखी कॅ
अखनी याद आबै
राधा–मोहन।

नल के जल
घर–घर टपकै
पीबिहें चल।

कौवा गहलै

कौवा गहलै रे, कौवा गहलै.....
आबी रहलै रे, आबी रहलै।...
सुनथैं सात दिनां के छुट्टी, लहलै रे हमरा लहलै।

नाज करै छै गाँव समुच्चा
बेटा हँसमुखिया पर
बेटा भी छै मेहरवान,
गामोॅ केरो दुखिया पर
जिनका से सीमा पर दुश्मन, दहलै रे दुश्मन दहलै।
आबी रहलै रे, आबी रहलै..... कौवा गहलै रे....

भोर होलै भरियैलो लागै
देह गात सब भारी
काम–धाम धरले छै सबटा
अभियो वहा खुमारी
कोखी के सुकमार पहुनमां टहलै, रे कौवा गेलै।

एठें देह हवा पुरबैया, बहलै रे.. हमरा लहलै

दीया नाँकी

सच्चा से सच्चा बोली के चलना छै
अनहरिया में दीया नाँकी जलना छै।

गलती जों भगवानें से होलो होतै
मोम बनी के दुनिया खातिर गलना छै।

सूरज से बड़का हितकारी के होतै
तैयो रोजे साझों के बेरा मॅ ढलना छै।

फुल्ला बुतरू धरती के जों चाटे तें
समझो ई धरती ही मचिया–पलना छै।

दिल के दरबज्जा पर जे ठोकै ताला
हाथ मिलाबै ले भी हाथों मलना छै।

लगडा भी दौड़ै झटकै छै

जब जब हुनको मुँह लटकै छै
हमरां भीतर सें खटकै छै। 1

थाली के भोजन जे फेकै
रोटी लेली उ रटकै छै। 2

आप्पन घर में कुतबो बरियो
बच्चा भी लाठी पटकै छै। 3

आफत के अन्देसा देखी
लगडा भी दौड़ै झटकै छै। 4

मेहनत से भागै बाला के
अतड़ी पीठी में सटकै छै। 5

बिगडल जों मालिक छै खुद्दे
तब हुनकर बच्चा भटकै छै। 6

नयकी कें कुछ छूट चाहियो
नया नया झटकै मटकै छै। 7

कमिंया कॅ फाटै चुनरी तॅ
हाथों के चूड़ी चटकै छै। 8

मेहनत बेरथ छै ओकरों जे
छुच्छे खखरा कॅ फटकै छै। 9

सरंग

अंग के सरंग में उमंग रंग–रंग के
मीत–प्रीत, हार–जीत, गीत–रीत गंग के।

बिहुला, नेमान, छठ, बिसुआ, जेठान छै
दोहा, लोरी, घटवार, गोदना, मनॉन के।

इतिहास कथा व कहानी काकी नानी केरों
चौहर, कुँवर, विशु, लचिका जे रानी के।

बिहुला, नेमान, छठ, होली गुड–भंग के,
अंग के सरंग में उमंग रंग–रंग के।

राधेश्यामली छंद (16,16)

गोकुल में चुलबुल कान्हा के, बंशी सुनथैं सिहरै तनमन
पनघट के पानीं में झलकै, आधा राधा, आधा मोहन।

यमुना मेँ डुबकी मारी के, पानी थपकारी के मुस्कै
मोहन आबै डुबकी मारी, सखिया के अखिया में घुस्कै।

राधा मोहन लटझार करै, गोपी नाचै गोपा नाचै
गैया–बछड़ा उछलै कूदै, घंटी घुंघरू खोपा नाचै।

उज्जैन धरा पर ज्ञान मिलै, ज्ञानों के ढेरी इत्र मिलै
मिलतें–मिलतें दू चित्र मिलै, गोपाल सुदाम मित्र मिलै।

जिनको दिल में घनश्याम बसै, उनको द्वारी बिछलो आसन
बृन्दावन में घर–घर बाजै, पायल छनछन चूड़ी खनखन।

टालों नै

अंग–अंगिका, हिन्दी, बंगला बोलै इ सब भालों नै
गाँव–घरो में दुष्ट शकुनी, दुष्ट विभीषण पालों नै।

मोल कमैलो छिरियैलो छै अधकचरो के फेरा में
मजदूरी लॅ कानै–कलपै कत्ते कमियां जेरा में
आजको काम समेंटो आजे, काल भरोसें टालों नै।

सुख के सूरज असर करलकै सठबरसा से चेंगना में
साईकिल पर बेटी आबै तॅ मैया मुस्कै एंगना में
सुख पर लुक्का बारी के आपनों में फूट तों डालों नै।

मेल–जोल से खेती–बाड़ी, गीत–भजन चौपालो पर
कौर बड़ो होय छै तखनी जब घी टपकै छै दालों पर
ठंढ़ा बात के उटकी–पैची आगिन चढ़ी उबालों नै।

पुरषोत्तम राम

सिया राम लक्षमण दशरथ के हुयै विधाता बाम
सही मेँ पुरषोत्तम श्री राम।

पिता बात पर बनवासी के छुटै अयोध्या धाम
सही मेँ पुरषोत्तम श्री राम।

पत्थर सॅ नारी बनलै सब कहै अहिल्या नाम
पार लगाबै बाला के दुख केवट लेलकै थाम
हिरण से जादे सीता के चुकबे पड़लै दाम
सही मेँ पुरषोत्तम श्री राम।

बृद्ध जटायु मरतें–मरतें करै राम के काम
सबरी के चखलॉ बैरॉ के खैलकै करी प्रणाम
अनुज भरत जी पूजै, मन से रोजे–रोज खड़ाम
सही मेँ पुरषोत्तम श्री राम।

बाली–बध होथैं सुग्रीव के संकट हौले पूर्ण विराम
नल सेना सागर के बाँधै टपकै देह सेँ छर–छर घाम
सेना में एक महावीर नायक बनलै हनुमान
सही मेँ पुरषोत्तम श्री राम।

लंका फतह करी के लौटै रथ पर सब भगवान
सही मेँ पुरषोत्तम श्री राम।

डॉ. नरेष पाण्डेय चकोर

14–11–2015 पूण्य तिथि

दु हजार पनरे केरो, चौदे तिथी कठोर।
वहाँ साँझ के छो बजे, गुजरि गेलै 'चकोर'।।

कार्तिक–शुक्ल तिरतिया, जय काली के शोर।
अंग–सभा अर्पित करै, अमरित कलश 'चकोर'।।

गोरो साढ़े पाँच फुट, दूबर पातर ठोर।
अंग–अंगिका देह मेँ, भरलॉ पोरे–पोर।।

अंगमाधुरी देश मे, अर्ध शतक के ओर।
संपादक बेजोरबा, पाण्डेय श्री 'चकोर'।।

शेखर परकाशन रहै, सबके लेली भोर।
सब कॅ पीछू बाँधनें, आगू चलै 'चकोर'।।

रक्षक, संरक्षक चुनै, घूमीं ओरी–छोर।
सबके सम्मानित करै, जनबरी तिन 'चकोर'।।

लोरी, सोहर, फैकड़ा, मुकरी करै हिलोर।
खोजी–खोजी गाँव सेँ, लानै ढोय चकोर।।

मधुर–मधुर गपशप करै, कहियो नै मुँहजोर।
यहाँ रकम प्यारो बनी, सबके रहै 'चकोर'।।

सरहपा : (अंगिका के गाछ)

गीत

'सरहपा' के अमर कहानी लिखने छै सब ज्ञानी हो
हुनिये देनें छै अंगिका के गाछी में पानी हो।

जनम सात सौ तेंतिस ईसवीं, भागलपुर के धरती पर
रानी दियरा सन बस्ती में उजड़ल ऐंगना परती पर
दुनियां में इतिहास रचलकै, नौ सौ कथा–कहानी हो
हुनिये देनें छै अंगिका के गाछी में पानी हो।

विक्रमशील में पढ़ी के बुतरू 'राहुल', भेलै 'सरहप्पा'
हरिभद्र गुरूदेव रहै, हुनिये गुण–ज्ञान केरों पप्पा
तंत्र–मंत्र तिब्बत में, पत्नी सबर–सुता कैं मानी हो
हुनिये देनें छै अंगिका के गाछी में पानी हो।

अंगिका आरू मगही केरों पहिलों कविताकार हो
हुनको दोहा में भरलो उपदेश केरो उपहार हो
चेला–चटिया हुनको ज्ञाणी, कोय राजा कोय रानी हो
हुनिये देनें छै अंगिका के गाछी में पानी हो।